लोहरदगा शहर : नगरीय भूगोल एक अध्ययन

पीएच. डी. उपाधि निबंधन हेतु शोध प्रारुप ।

विश्वविद्यालय , भूगोल विभाग

सामाजिक विज्ञान संकाय

राँची विश्वविद्यालय , राँची

निर्देशक

डॉ॰ सुनील कुमार

सहायक प्राध्यापक

भूगोल विभाग

राँची विश्वविद्‍यालय , राँची

शोधार्थी

साहबीर उराँव

एम॰ ए॰ नेट,जे॰आर॰एफ॰

1 शोध शीर्षक का संक्षिप्त परिचय : –

भूगोल का अध्ययन प्राचीन काल से ही किया जाता रहा है। 1940 तक शहरी भूगोल पर जोर नहीं दिया गया था । द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मानव भूगोल का विकास हुआ उसके अनुरुप ही शहरी भूगोल का विकास हुआ ।

प्राचीन काल में प्रख्यात भूगोलवेताओं ने शहरी भूगोल का अध्ययन किया है। स्ट्रैबो ने अपनी पुस्तक '' भूगोल में नगरों की स्थिति पर बल दिया । 1793 में विलियम फ्रेड्रिक मार्टिन ने अपनी पुस्तक '' न्यू सिस्टम्स इन जियोग्राफी '' में ग्रेट ब्रिटेन के शहरों का वर्णन किया हैं । 20वीं सदी की शुरूआत में 1901 में बाल्शेर और 1907 में कर्ट हैगसार्ट ने शहरों पर एक महत्वपूर्ण लेखन किया । 1905 में टॉवर और 1925में बर्गेस ने अमेरिकी शहरों के ऐतिहासिक –आनुवंशिक विकास के आलोक में उनके भौगोलिक पहलुओं का विस्तृत विवरण प्रदान किया है।

नगरीय भूगोल में किसी नगर का भौगोलिक अध्ययन करता हैं । नगरीय भूगोल के अन्तर्गत नगर का भौतिक पक्ष, कार्यात्मक पक्ष , जनांकिकीय पक्ष ,स्थानिक संबंध , नगरीकरण ,नियोजन , आदि सभी पक्षों का अध्ययन किया जाता है ।

नगरीय भूगोल नगरीय स्थानों एवं नगर के समीपवर्ती प्रभावित क्षेत्रों का भौगोलिक अध्ययन है ।

ग्रिफिथ टेलर के अनुसार :– '' नगरीय भूगोल नगर के बसाव स्थान , प्रादुर्भाव , प्रारूप तथा वर्गीकरण करता है ।''6

एल• डी• स्टम्प के अनुसार :– '' नगरीय भूगोल का उद्देश्य भौगोलिक पक्षों के प्रसंग में नगरों के विकास का गहन अध्ययन करना हैं "। 7

किसी भी क्षेत्र को नगर कहे जाने के लिए कम से कम निम्न शर्तों को पूरा करना चाहिए –

1 कम से कम 5000 नगरीय जनसंख्या हों ।
2 पुरूष कार्यशील जनसंख्या का कम से कम 75 प्रतिशत भाग अकृषित कार्यो में संलग्न हो ।
3 जनसंख्या का घनत्व कम से कम 400 व्यक्ति प्रति वग किमी• हो ।
4 वह सभी स्थान जहाँ नगरपालिका , टाऊन एरिया , छावनी बोर्ड या अधिसूचित नगर क्षेत्र स्थापित हो ।

इसके अलावे जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना , जनघनत्व , जन सुविधाओं एवं नगरीय सेवाओं की अधिकता तथा प्रशासकीय कार्यों की विशेषता पर भी ध्यान दिया जाता है ।

क्रोबी (1938) ने शहरी भूगोल को सिद्ध करने का प्रयास किया । रॉबर्ट ई. डिक्सन (1947) ने विभिन्न शहरो का विस्तार से अध्ययन किया । उन्होंने अपने प्रकाशन में शहरों की उत्पति और उनके विकास पर विभिन्न प्राकृतिक कारकों के प्रभाव का

वर्णन किया हैं। शहरी भूगोल में मनुष्य के घर के रूप में शहरी बसावट की संरचना , प्रक्रिया और चरणों के संबंध में अध्ययन किया जाता है जो शहरी विकास की पारंपरिक प्रक्रिया के साथ –साथ इसकी भौतिक संरचना , सामाजिक और आर्थिक विशेषताओं को निर्धाति करता है।

2, अद्यतन स्थिति :–

लोहरदगा शहर बहुत ही प्राचीन शहर हैं । लेकिन शहर का विकाश नहीं हुआ है । जिले का नामकरण लोहरदगा शहर के नाम पर पड़ा जो मुख्यालय बना । शहर का विकास धीमी गति से हो रही है। लोहरदगा जिला 1983 में राँची को तीन जिलों अर्थात राँची , लोहरदगा एवं गुमला में विभाजित करने के बाद अस्तित्व में आया । जिले का नाम जिले के प्रशासनिक मुख्यालय लोहरदगा के नाम पर रखा गया है ।

1972 ई0 में लोहरदगा को अनुमंडल एवं 1983 में जिले के रूप में स्थान प्राप्त हुआ । लोहरदगा हिन्दी के दो शब्दों ' लोहार ' जिसका शाब्दिक अर्थ लोहे का व्यापारी और ' दगा ' जिसका अर्थ केंद्र अर्थात लोहे खनिज का केंद्र होता है।

यह 23°25` उत्तरी अक्षांश से 23°27'30" उत्तरी अक्षांश तक एवं 84°39'30" पूर्वी देशांतर से 84°42'30" पूर्वी देशांतर के बीच स्थित हैं ।

लोहरदगा शहर का क्षेत्रफल 35,20 वर्ग किमी है । इसमें कुल वार्डो की संख्या 22 हैं । 2011 जनगणना के अनुसार शहर की कुल जनसंख्या 57411 है , जिसमे महिलाओं की जनसंख्या 28037 एवं पुरूषों की जनसंख्या 29374 है । यह लोहरदगा जिले की कुल जनसंख्या का 12% है । लोहरदगा शहर में की औसत साक्षरता दर 85.37 % है , जिसमें पुरूषों की साक्षरता दर 89 % एवं महिलाओं की साक्षरता दर 80,75 % हैं । यह एक प्रशासनिक नगर है । इस शहर में प्रति दिन 39 टन (2021 – 2022) कचरे निकलते है । 2015–2016 में यह 32 टन कचरा हुआ करता था।

लोहरदगा में बॉक्साईट खनिज पाया जाता है। जिसे कच्चे माल के रूप में मूरी भेजा जाता है। यह ब्रिटिस काल से ही चला आ रहा है। जिसे परिवहन मूल्य अधिक लगता है । जिसे अंतिम उत्पाद के मूल्य में वृद्धि हो जाता है । क्योंकि बॉक्साईट एक अशुद्ध खनिज हैं । 4 से 5 टन बॉक्साईट का खनन किया जाता हैं, जिसमें 1 टन लगभग शुद्ध पदार्थ प्राप्त हाता हैं।

यदि सरकार द्वारा लोहरदगा में ही एल्युमिनियम उद्योग को स्थापित किया जाता हैं तो परिवन लागत में कमी आएगा , तथा वस्तुओं के अन्तिम उत्पाद के मूल्य में भी कमी आएगा ।

जिसे बाजार में सस्ती किमतों पर वस्तु उपलब्ध हो पाएगा तथा बाजार में अपना पकड़ बना सकते है ।

साथ ही साथ लोहरदगा शहर का विकास भी तेजी से होगा एवं लोहरदगावासियों को रोजगार उपलब्ध हो जाएगें ।

लोहरदगा जिले के 80 % लोग प्राथमिक कार्य में संलग्न है । यहाँ के अधिकांश लोग कृषि कार्य में लगे हुए है । लोहरदगा शहर ऐसा स्थान पर स्थित है कि राँची , राऊरकेला , जमशेदपुर इन सभी शहरों को सड़क मार्ग एवं रेलमार्ग के द्वारा आपस में जोड़ती है।

यदि लोहरदगा शहर में कृषि व्यापारिक केन्द्र खोल दिया जाए तो शहर के विकास में एक कड़ो का काम करेगा तथा शहर क विकास में गति प्रदान करेगा ।

डॉ• सुरेश चंद्रबंसल ने अपनी पुस्तक नगरीय भूगोल में मलिन बस्ती की स्थिति के बारे में बताया हैं । कहते है कि इनकी बसाव –नगर के मध्य क्षेत्र में , औद्योगिक प्रतिष्ठानों के समीप , नगर के बाह्य क्षेत्रों में , रेल मार्ग के सहारे खाली पड़ी भूमि में , विस्तृत खुली सार्वजनिक भूमि पर इनका वास होता है ।

पैट्रिक गेडीज :–इन्होंने नगरो का वर्गाकरण उनकी स्थिति कार्यों आर्थिक एवं ऐतिहासिक सम्बंधों के आधार पर तीन अवस्थावों में विभक्त किया हैं –

1, आदिम अर्थव्यवस्था , 2 पुरानी अर्थव्यवस्था 3 नवीन मशीनी युग अर्थव्यवस्था।

इनफ्राटेक सर्विस लिमिटेड न्यू दिल्ली , ने अपनी रिपोर्ट (2021- 2022) मास्टर प्लान लोहरदगा में लोहरदगा शहर के कचरे पदार्थ के बारे में बताया है कि लोहरदगा शहर से प्रति दिन 39 टन कचरा निकल रहा है । तथा 2015–.2016 में यह 32 टन था । लगभग 7 वर्षो में 23 प्रतिशत की वृद्धि हुआ है।

झारखण्ड अरबन इनफ्रास्टेकचर डेवलपमेंट को• लिमिटेड ने अपनी रिपोर्ट सीटी सेनीटेसन प्लान लोहरदगा में लोहरदगा शहर के वार्ड के बारे में बताया है कि कुल 22 वार्ड है तथा जनसंख्या के बारे में भी बात किया हैं ।

नरेन (2003) :–

उन्होंने बताया है कि 19 वीं सदी में संयुक्त राज्य अमेरिका और कुछ यूरोपीय देशों में शहरीकरण देखा गया है । उन्होंने ग्रामीण विकास को शहरी विकास की ओर स्थानांतरित होने का अनुभव किया हैं । उन्होंने शहरीकरण में शामिल प्रक्रियाओं की व्याख्या की हैं और बताया है कि यह स्थानीय संस्कृति को संशोधित करेगा और यहाँ तक कि नष्ट भी कर सकता हैं।

फैसल अहमद (2014) :– इनके द्वारा किये गये अध्ययन से पता चलता है कि तेजी से शहरीकरण ने आर्थिक , पर्यावरणीय और सांस्कृतिक समस्याएँ पैदा की है। शहरीकरण के पर्यावरणीय प्रभाव हैं जैसे – जल आपूर्ति की समस्या , ठोस अपशिष्ट

प्रबंधन अपशिष्ट निपटान प्रणाली , जल भराव की समस्या एवं यातायात की भी और बुनियादी ढाचे की समस्याओं और शिक्षा , स्वास्थ्य , परिवहन जैसी शहरी सेवाओं पर अत्यधिक दबाव पैदा किया हैं। कचरे और डम्प की निकासी शहर में पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं ।

डो॰ आर॰ खुलर (2014):–

उन्होंने अपनी पुस्तक '' भारत एक व्यापक भूगोल '' में 1901 से 2011 तक भारत में शहरी बसावट और शहरीकरण की प्रवृतियों का अध्ययन किया । वह भारतीय शहरों के विकास को तीन कालों में परिभाषित करतें हैं – वे प्राचीन और मध्यकाल ,ब्रिटिश काल और स्वतंत्रता के बाद का काल हैं। भारत में शहरीकरण की तीन अवधियाँ हैं – धीमी शहरीकरण की अवधि मध्यम शहरीकरण की अवधि एवं तीव्र शहरीकरण की अवधि।

शिवरामकृष्ण (2004) :– उन्होंने बताया हैं कि शहरी विकास में पलायन प्रमुख कारक नहीं हैं । 1981–1991 की अवधि में कुल 60 प्रतिशत शहरी विकास देखा गया , जिसमें प्रवासन 21.20 प्रतिशत था। उनके अध्ययन से पता चला कि 1981 से 1991 के दौरान मुंबई ,दिल्ली और हैदराबाद में प्रवासन में वृद्धि हुई । लेकिन शहर के विकास के एक घटक के रूप में इसका हिस्सा में गिरावट आया ।

3. अनुसंधान (जाँच) की जाने वाली समस्या :–

1 आवासों की कमी एव अनियोजित आवास निर्माण की समस्या ।
2 मलिन बस्ती की समस्या।
3 पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ।
4 अनियोजित भूमि उपयोग की समस्या ।

4, अनुसंधान और प्रेरणा का उद्देश्य :–

1 लोहरदगा शहर की व्यवसायिक एवं कार्यात्मक संरचना का अध्ययन करना है
2 लोहरदगा शहर में विकास की प्रवृतियों और उनके पर्यावरणीय प्रभाव का अध्ययन करना है ।
3 लोहरदगा शहर की मलिन बस्तियों के सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक पहलूओं का अध्ययन करना हैं ।
4 लोहरदगा शहर का भूमि उपयोग का अध्ययन करना है ।

5. शोध परिकल्पना या अनुसंधान प्रश्न :–

1. लोहरदगा शहर में नगरीकरण की प्रवृति तीव्र हैं ।

2. लोहरदगा शहर का क्षेत्रीय विस्तार हो रहा हैं ।
3. लोहरदगा शहर के तीव्र नगरीकरण का शहरी पर्यावरण पर प्रभाव पड़ा है ।
4. लोहरदगा शहर में तीव्र नगरीकरण के कारण भूमि उपयोग में परिवर्तन हुआ हैं ।

6, अनुसंधान की रूपरेखा एवं पद्धति :–

a. वर्णात्मक विधि :– इस विधि के अन्तर्गत नगरीय भूगोल का अध्ययन वर्णात्मक रूप से किया जाएगा । इसमें किसी भी तथ्यों को शब्दों के माध्यम से रखा जाएगा । इसमें शब्दों का जाल बुना जाएगा । पाठ कि विशेषता को वाक्यों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा ।

b. गुणात्मक विधि :– जब कभी भी अनुसंधान पाठ में वर्णात्मक रूपरेखा को अपनाते हैं पद्धति अपने आप गुणात्मक में बदल जाता है। इसमें गुणों की व्याख्या की जाएगी ।

A. सम्भावित अध्याय :-

अध्याय : परिचय

प्रथम अध्याय : भौगोलिक पृष्ठ भूमि ।

द्वितीय अध्याय : नगरीकरण की प्रवृति ।

तृतीय अधयाय : नगरीकरण एवं भूमि उपयोग ।

चतुर्थ अध्याय : नगरीय परिसिमन का समान्य विश्लेषण ।

पंचम अध्याय : नगरीय वृद्धि एवं विस्तार ।

छठी अध्याय : नगरीय आकारिकी एवं विश्लेषण ।

सप्तम् अध्याय : नगरीय कार्यात्मक विश्लेषण ।

अष्टम् अध्याय : नगरीकरण एवं परिवहन नेटर्वक विश्लेषण ।

नवम् अध्याय : नगरीय समस्याएँ एवं विकास के नियोजन ।

: संदर्भ सूची

: परिशिष्ठ

7, आकड़ों के स्त्रोत तथा आकड़ा संग्रह में उपयोग किये जाने वाले उपकरण :–

प्राथमिक आकड़ा :–

– अवलोकन विधि में शोध क्षेत्रों का भ्रमण करते समय जो देखेंगे उसे पाठ में वर्णात्मक रूप से प्रस्तुत करेंगे ।

– साक्षातकार विधि : इसमें किसी व्यक्ति या संस्थान से प्रश्न पूछ कर उससे आँकड़ा एकत्र किया जाएगा।

– द्वितीयक आकड़ा :– इन्टरनेट , पत्रिकाएँ ,शोध ग्रंथ , समाचार पत्र , जिला जनगणना पुस्तिका , लोहरदगा जिला का राजपत्र , नगरपालिका कार्यालय , लोहरदगा जिला परिष्द , आदि से प्राप्त किया जाएगा ।

8, आकड़ों का विश्लेषण :–

सांख्यिकीय विधि : – सांख्यिकीय विधियों का उपयोग कर आँकड़ों का विश्लेषण किया जाएगा

–– प्रतिदर्श आकार :– लोहरदगा शहर में कुल 22 वार्ड है । शोध परिकल्पना

की परीक्षण के लिए शहर के वार्ड संख्या –2 , 3 , 5 , 7 , 8 , 11 , 13 , 17 , 18 एवं 22 से आँकड़े एकत्र किया जाएगा तथा प्रत्येक वार्ड से 15–20 प्रतिदर्श लिये जाएँगें कुल मिलाकर लगभग 150 से 200 प्रतिदर्श लिया जाएगा । उपयुक्त विधि का चयन कर शोध परिकल्पना का परीक्षण किया जाएगा।

9, अध्ययन का महत्व :–

1. शहरो लोगों का आर्थिक क्रियाकलाप को समझने के लिए महत्वपूर्ण है ।

2. शहर की रूपरेखा को समझने के लिए इसका अध्ययन आवश्यक है ।

3. लोहरदगा शहर किन किन तत्वो से प्रभावित हो रहा है उसे समझने के लिए इसका अध्ययन महत्वपूर्ण हैं ।

4. लोहरदगा शहर के विकास के लिए क्या आवश्यक है उसे समझने के लिए लोहरदगा शहर का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

10. वर्तमान समय की समस्या और समाज की आवश्यकता में इसकी प्रसंगिकता :– लोहरदगा के नगरीय भूगोल का अध्ययन समाज के लिए सार्थक है ।

क्योंकि नगर विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान करती है जिससे नगर में नगरीय विस्तार के साथ साथ विभिन्न प्रकार की समस्या उत्पन हो रही है । जिसे शहरवासियों को सामना करना पड़ रहा है।

शहर की कुछ समस्या ऐसे होती है जिसे सिर्फ नियंत्रित किया जा सकता है । इन सभी समस्याओं को नियंत्रन एवं समाधान के साथ साथ नगर की सुव्यवस्थित विकास के लिए नगरीय भूगोल का अध्ययन अति आवश्यक है ।

11, वर्तमान ज्ञान में योगदान :–

लोहरदगा शहर अनियोजित पूर्ण बसा हुआ शहर है । शहर का विकास दिन प्रतिदिन हो रहा है । विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो रही है । लेकिन हमें यह नहीं पता कि किस वजह से समस्या हो रही है , तथा समाधान क्या है ? इस शोध से लोहरदगा नगर की भौगोलिक स्थिति को समझने में सहायक होगा । शहरी समस्याओं को नियंत्रित करन में सहायक होगा । लोगो की आवश्यकता एवं मांग को समझने में योगदान करेगा ।

12, भविष्य के कार्य :–

लोहरदगा शहर का विकास के लिए सरकार कोई योजना लाती है तो उसे नगर का भौगोलिक जानकारी प्रदान करना । जिसे लोहरदगा नगर को समझने एवं योजना को लागू करने में मददगार सिद्ध होगा ।

शोध का यही लक्ष्य है कि भविष्य में नगरीय योजनाओं के लिए नगर से संबंधित छोटी बड़ी सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराना है।

13, संबंधित संदर्भ :–

1. बंसल ,डॉ सुरेश चन्द्र ,2009 , *नगरीय भूगोल* , : मीनाक्षी : सहारनपुर । पृ• सं•37

2. झारखण्ड अरबन इनफ्रास्टेक्चर डेवलपमेंट को • लि• *सेनीटेशन प्लान लोहरदगा,* 2021

3. एन एफ सर्विस लिमिटेड न्यू दिल्ली , *मास्टर प्लान लोहरदगा*

4. डिकिंसन ,आर. ई. :*शहर और क्षेत्र , एक भौगोलिक एकीकरण,* बटलर एंड टान्नर लिमिटेड ,लंदन 1966 पृ• सं• 13

5. फ्रेंड्रिक , ए. *: शहरी भूगोल :एक सामाजिक परिप्रेक्ष्य,* प्रेगर, इंक. , न्यूयॉर्क 1973

6, स्टम्प एल डी.: *भुमि का उपयोग एवं दूरूपयोग* : केवाल टाउन ,पी.एच डी, थेसिस वारानसी अप्रकाशित । पृ• सं• 7

7 . ममफोर्ड, एल.: *शहरों की संस्कृति, मैकमिलन एंड कंपनी* ,लंदन 1938 पृ•स• 4,5 ।

8 . टेलर, ग्रिफिथ : *नगरीय भूगोल* : मेथुन , लंदन 1964 : पृ• सं• 6